सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

■ वर्ष : 14 ■ ■ अंक : 1 ■ ■ 5 अप्रेल 2017 ■ ■ मूल्य : 20 रु. ■

कार्य व कारण में परस्पर गहरा संबंध है। कार्य की पूर्णता में कारण का पूर्ण योगदान है। क्योंकि बिना कारण कोई कार्य हो नहीं सकता।

कार्य हमें नजर आता है, जबकि कारण नजर नहीं आता।

पर गहराई से सोचेंगे तो पायेंगे कि दोनों में मुख्य कारण है। क्योंकि कारण ही कार्य का जनक है।

जीवन में हम या तो सुख पाते हैं या दु:ख! इनके मूल कारणों के संदर्भ में हम गहराई से चिंतन नहीं करते।

सुख चाहते हैं पर जो सुख का कारण है, उसके प्रति रूचि नहीं। दुख नहीं चाहते, पर दुख के कारणों को दूर करने की चेष्टा नहीं करते।

हम सुख चाहते हैं पर सुख के उपायों का आचरण नहीं करते। दुख अधर्म का परिणाम है। अधर्म दुख कारण है क्योंकि दुख पाप से मिलता है और पाप अधर्म से होता है।

सुख धर्म का परिणाम है। धर्म सुख का कारण है क्योंकि सुख पुण्य से मिलता है और पुण्य धर्म से होता है। निष्कर्षत: सुख का कारण धर्म है और दुख का कारण पाप है।

जब दुख मिलता है तब हम दुख को दूर करने की चेष्टा करते हैं या उसके मूल कारण पाप को!

हम दुखी दुख से होते हैं या पाप से!

चिंतन की गहराई में डुबकी लगाकर यह प्रश्न अपने आप से पूछा जाना चाहिये। कारण को दूर करने से ही कार्य से दूर रहा जा सकता है। पाप को दूर करने से ही दुख को देशनिकाला दिया जा सकता है।

धर्म को अपना कर ही सुख का विस्तार किया जा सकता है।

आगम मंजूषा

भगवान महावीर

कोहो पीइं पणासेइ माणो विणयनासणो ।
माया मित्ताणि नासेइ लोभो सव्वविणासणो ॥

– दशवैकालिक 6/16

क्रोध प्रीति का नाष्ठा करता है, मान विनय का नाश करता है, माया (कपट) मैत्री का नाश करती है और लोभ सर्व का नाश करता है।

Anger destroys love ; ego destroys modesty; deceit destroys friendship and greed destroys everything.

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	01
2. गुरुदेव की कहानियां	आचार्य जिनमणिप्रभसूरि	03
3. सद्दाल पुत्र	मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.	05
4. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	07
6. पुस्तक समीक्षा	भाविन के. पण्ड्या	09
7. श्रीमहावीर विनती स्तवन	मणिगुरु चरणरज आर्य मेहुलप्रभसागर	11
8. स्मृति शेष घमंडीरामजी प्रतापमलजी ललवाणी	आचार्य जिनमणिप्रभसूरि	14
9. स्मृति शेष पूजनीया गुरुवर्या श्री के संस्मरण	डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	16
10. समाचार दर्शन	संकलन	18
11. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	24

पूज्यश्री की निश्रा में आयोजन

– 17 अप्रेल 2017 को देवेन्द्रनगर रायपुर में अंजनशलाका प्रतिष्ठा
– 21 अप्रेल 2017 को भैरू सोसायटी में सीमंधर मंदिर की प्रतिष्ठा
– 24 अप्रेल 2017 को वैशालीनगर भिलाई में शांतिनाथ प्रभु की प्रतिष्ठा
– मई 2017 को पद्मनाभपुर दुर्ग में प्रतिष्ठा

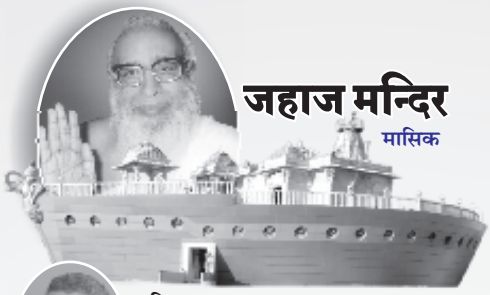

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता
खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री मज्जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 14 अंक : 1 5 अप्रेल 2017 मूल्य 20 रू.

प्रधान संपादक :
डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)
संपादक :
भूपत चौपड़ा

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	: 21,000 रूपये
मानद संरक्षक	: 11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	: 2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	: 2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	: 1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	: 500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	: 200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

विज्ञापन हेतु प्रचार मंत्री
कैलाश बी. संखलेचा, चैन्नई
से संपर्क करावें।
मो. 094447 11097

गुरुदेव की कहानियाँ

वाणी का जहर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

(गतांक से आगे)

बिचारा घबरा गया। अब क्या करे?पूछने में भी संकोच और इधर पत्नी की भूख हड़ताल की धमकी। अच्छा पूछकर बताऊँगा?रात में तो शान्ति से सोने दो। उसने सोचा-शायद प्रात: जब सोकर उठेगी तब तक फितूर उतर चुका होगा।

पर प्रात: होते ही उसकी धारणा असत्य हो गई। सोमा ने वही विकराल स्वरूप धारण करके कहा–''जाओ पहले पूछकर आओ कि क्यों हंसे थे?'' पति ने खूब समझाया पर उसका हठ नहीं टूटा। वह नीचे उतरा। उसने पिताजी से कुछ भूमिका बांधकर कहा–''पिताजी आप कल क्यों हंसे थे?''

पिताजी चौंके। फिर कहा–''कुछ नहीं बेटा! मैं तो यों ही हँसा था। तुम्हारे सम्बन्ध में नहीं हँसा था।''

उसने पुन: कहा, ''पिताजी! आपको स्पष्ट बताना होगा अन्यथा सोमा भूख हड़ताल करके बैठी है।''

भवितव्यता के समक्ष सोमदत्त, जिसे आज तक सीने में दबा दिया था, उसे होठों पर ले आए। उन्होंने कुएं में धक्का देना आदि सारा वृत्तांत कह सुनाया। आगाह भी कर दिया–बेटा! तुम इसे अपने तक ही रखना। आज तक कोई नहीं जान सका। तुम भी चुप्पी रखना। पुत्र ने हाँ कहा और ऊपर चला गया।

सोमा से कह दिया– कोई बात नहीं थी। यों ही जवानी की कोई रसभरी कहानी याद आ गई थी। सोमा ने कहा, ''नहीं! आप छिपा रहे हैं। आपको बताना ही होगा।''

पति ज्यादा देर बात पचा नहीं सका और सब कुछ यथार्थ उगल दिया। सोमा को तो जैसे मुँह मांगी मुराद मिल गई। उसने कहा–ठीक है अब बुढ़िया को ठीक पकड़ूँगी।

दोपहर में किसी बर्तन के टूटने पर सास ने जब कुछ कहा तो तुनक कर सोमा बोली, ''ज्यादा बनो मत। मैंने तो बरतन ही गिराया है। कोई इन्सान मारने का पाप नहीं किया है। लोग तो जीवित पति को कुएं में धकेलने में भी नहीं हिचकिचाते।''

सेठानी अवाक् रह गई। हो न हो वर्षों का गड़ा हुआ मुर्दा उखड़ गया है। अब जब तक जीवित रहूँगी, जब-तब यह सुनना होगा। बार-बार सुनने की अपेक्षा मृत्यु ही श्रेयस्कर है।

वह ऊपर गई और साड़ी का फन्दा बनाकर छत से लटक गई। सेठजी खाना खाने आए। बहू ने संकेत से बता दिया– ऊपर है। सोमदत्त किसी अनहोनी की आशंका से भर गया। ऊपर जाकर पत्नी को छत से लटकती देखा तो समझ गया–अब रहस्य से पर्दा तो हट ही गया है। धिक्कार है मेरे पुत्र प्रेम को। उसके सामने मैं झुक गया। सुखी जीवन को

आग लगा दी। अब मैं भी जीवित रहकर क्या करूँगा?उसने पत्नी को नीचे उतारा और स्वयं लटक गया।

काफी समय बीत जाने पर भी जब पिताजी दुकान पर नहीं पहुँचे तो पुत्र दुकान पर ताला लगाकर घर आया। पूछा उसने भी–आज न माँ दिखाई दे रही है, न पिताजी पहुँचे?बात क्या है?

सोमा ने तुनकते हुए कहा, ''मुझे क्या मालूम?दोनों अभी तक ऊपर गटर-पटर करते होंगे। क्या मालूम क्या योजना बना रहे होंगे?'' पुत्र ऊपर गया। ऊपर का दृश्य देखते ही उसकी आँखें फट गई।

उसे अपने पर भयंकर ग्लानि उत्पन्न हो गई। विषयवासना में डूबा मैं अपने कर्तव्य को भूल गया। मेरी ही भूल ने मुझे माँ-पिताजी का हत्यारा बनाया है। पत्नी के प्यार में अंधा होकर यह भी नहीं सोचा कि घटना का रूख किधर मुड़ेगा। लोगों की नजरों में गिरने से अच्छा है, जिस रास्ते दोनों गये हैं, उसी पर मैं भी जाऊँ।

पिताजी के शव को नीचे उतारा और स्वयं लटक गया।

जब काफी समय हो गया तो सोमा के मन में भी खलबली होने लगी। आखिर बात क्या है?जो जाता है, लौटकर ही नहीं आता। देखूं तो सही आखिर बात क्या है?

ऊपर का नजारा दिल दहलाने वाला था।

तीनों प्राणी मृत्यु के मुख में पहुँच चुके थे। वह पश्चाताप करने लगी। ओ हो! मेरी ही तीखी जुबान इन सभी को खा गई। अगर मैं संभल गई होती अथवा अपने आपको नियन्त्रित रखकर घर को स्वर्ग बनाने में लगी होती तो।

वास्तव में स्वर्ग और नरक यहीं हैं। बाहर नहीं। अपनी ही प्रकृति से इन्सान घर को स्वर्ग बनाता है और नरक भी। अब मैं संभल जाऊँ पर किसके लिए?कौन बचा है?सभी को तो मैं खा गई। जीवन पर तड़पने की अपेक्षा मुझे भी यही राह पकड़नी चाहिए।

एक घटना....एक शब्द और चार हत्या। शब्द कितना व्यापक होता है। अगर शब्द में जहर की जगह अमृत घोलें तो जीवन की खुशियाँ-उल्लास बरस सकता है और अगर जहर हो तो....

पूज्यश्री का कार्यक्रम

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य देव श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ठाणा 3 एवं पू. माताजी म.श्री रतनमाला श्रीजी म. पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. ठाणा 11 ने राजगृही वीरायतन में ता.17 फरवरी को प्रतिष्ठा करवाकर ता. 23 फरवरी को रायपुर की ओर विहार किया। वे राजगिर से गया, बोध गया, भद्दिलपुर, गुमला होते हुए अप्रेल के प्रथम सप्ताह में रायपुर पधारेंगे, जहाँ देवेन्द्रनगर में उनकी पावन निश्रा में ता. 17 अप्रेल 2017 को प्रतिष्ठा संपन्न होगी। ता. 21 अप्रेल को भैरव सोसायटी में प्रतिष्ठा करवाकर दुर्ग पधारेंगे, जहाँ ता. 1 मई को पद्मनाभपुर में प्रतिष्ठा संपन्न होगी।

दस महाश्रावकों की प्रेरक-जीवन-गाथा

सद्दाल पुत्र

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

(गतांक से आगे)

बिचारा घबरा गया। अब क्या करे?पूछने में भी संकोच और इधर पत्नी की भूख हड़ताल की धमकी। अच्छा पूछकर बताऊँगा?रात में तो शान्ति से सोने दो। उसने सोचा-शायद प्रातः जब सोकर उठेगी तब तक फितूर उतर चुका होगा।

पर प्रातः होते ही उसकी धारणा असत्य हो गई। सोमा ने वही विकराल स्वरूप धारण करके कहा–''जाओ पहले पूछकर आओ कि क्यों हंसे थे?'' पति ने खूब समझाया पर उसका हठ नहीं टूटा। वह नीचे उतरा। उसने पिताजी से कुछ भूमिका बांधकर कहा–''पिताजी आप कल क्यों हंसे थे?''

पिताजी चौंके। फिर कहा–''कुछ नहीं बेटा! मैं तो यों ही हँसा था। तुम्हारे सम्बन्ध में नहीं हँसा था।''

उसने पुनः कहा, ''पिताजी! आपको स्पष्ट बताना होगा अन्यथा सोमा भूख हड़ताल करके बैठी है।''

भवितव्यता के समक्ष सोमदत्त, जिसे आज तक सीने में दबा दिया था, उसे होठों पर ले आए। उन्होंने कुएं में धक्का देना आदि सारा वृत्तांत कह सुनाया। आगाह भी कर दिया–बेटा! तुम इसे अपने तक ही रखना। आज तक कोई नहीं जान सका। तुम भी चुप्पी रखना। पुत्र ने हाँ कहा और ऊपर चला गया।

सोमा से कह दिया– कोई बात नहीं थी। यों ही जवानी की कोई रसभरी कहानी याद आ गई थी। सोमा ने कहा, ''नहीं! आप छिपा रहे हैं। आपको बताना ही होगा।''

पति ज्यादा देर बात पचा नहीं सका और सब कुछ यथार्थ उगल दिया। सोमा को तो जैसे मुँह मांगी मुराद मिल गई। उसने कहा–ठीक है अब बुढ़िया को ठीक पकड़ूँगी।

दोपहर में किसी बर्तन के टूटने पर सास ने जब कुछ कहा तो तुनक कर सोमा बोली, ''ज्यादा बनो मत। मैंने तो बरतन ही गिराया है। कोई इन्सान मारने का पाप नहीं किया है। लोग तो जीवित पति को कुएं में धकेलने में भी नहीं हिचकिचाते।''

सेठानी अवाक् रह गई। हो न हो वर्षों का गड़ा हुआ मुर्दा उखड़ गया है। अब जब तक जीवित रहूँगी, जब-तब यह सुनना होगा। बार-बार सुनने की अपेक्षा मृत्यु ही श्रेयस्कर है।

वह ऊपर गई और साड़ी का फन्दा बनाकर छत से लटक गई। सेठजी खाना खाने आए। बहू ने संकेत से बता दिया– ऊपर है। सोमदत्त किसी अनहोनी की आशंका से भर गया। ऊपर जाकर पत्नी को छत से लटकती देखा तो समझ गया–अब रहस्य से पर्दा तो हट ही गया है। धिक्कार है मेरे पुत्र प्रेम को। उसके सामने मैं झुक गया। सुखी जीवन को आग लगा दी। अब मैं भी जीवित रहकर क्या करूँगा?उसने पत्नी को नीचे उतारा और स्वयं लटक गया।

काफी समय बीत जाने पर भी जब पिताजी दुकान पर नहीं पहुँचे तो पुत्र दुकान पर ताला लगाकर घर आया। पूछा उसने भी–आज न माँ दिखाई दे रही है, न पिताजी पहुँचे?बात क्या है?

सोमा ने तुनकते हुए कहा, ''मुझे क्या मालूम?दोनों अभी तक ऊपर गटर-पटर करते होंगे। क्या मालूम क्या योजना बना रहे होंगे?'' पुत्र ऊपर गया। ऊपर का दृश्य देखते ही उसकी आँखें फट गई।

उसे अपने पर भयंकर ग्लानि उत्पन्न हो गई। विषयवासना में डूबा मैं अपने कर्तव्य को भूल गया। मेरी ही

भूल ने मुझे माँ-पिताजी का हत्यारा बनाया है। पत्नी के प्यार में अंधा होकर यह भी नहीं सोचा कि घटना का रूख किधर मुड़ेगा। लोगों की नजरों में गिरने से अच्छा है, जिस रास्ते दोनों गये हैं, उसी पर मैं भी जाऊँ।

पिताजी के शव को नीचे उतारा और स्वयं लटक गया।

जब काफी समय हो गया तो सोमा के मन में भी खलबली होने लगी। आखिर बात क्या है?जो जाता है, लौटकर ही नहीं आता। देखूं तो सही आखिर बात क्या है?

ऊपर का नजारा दिल दहलाने वाला था।

तीनों प्राणी मृत्यु के मुख में पहुँच चुके थे। वह पश्चाताप करने लगी। ओ हो! मेरी ही तीखी जुबान इन सभी को खा गई। अगर मैं संभल गई होती अथवा अपने आपको नियन्त्रित रखकर घर को स्वर्ग बनाने में लगी होती तो।

वास्तव में स्वर्ग और नरक यहीं हैं। बाहर नहीं। अपनी ही प्रकृति से इन्सान घर को स्वर्ग बनाता है और नरक भी। अब मैं संभल जाऊँ पर किसके लिए?कौन बचा है?सभी को तो मैं खा गई। जीवन पर तड़पने की अपेक्षा मुझे भी यही राह पकड़नी चाहिए।

एक घटना....एक शब्द और चार हत्या। शब्द कितना व्यापक होता है। अगर शब्द में जहर की जगह अमृत घोलें तो जीवन की खुशियाँ-उल्लास बरस सकता है और अगर जहर हो तो....

वासनाएं कभी पूर्ण नहीं होती?

संकलन : कैलाश संखलेचा, चैन्नई

थोड़ा विचार करे मनुष्य, धन यदि हो तो धन की व्यर्थता अनुभव कर लेना सरल है। धन न हो तो धन व्यर्थ है, ये अनुभव करना थोड़ा कठिन है।

जो नहीं है पास में उसकी व्यर्थता को मनुष्य कैसे परखेगा?

सोना हो तो सोने को परखा जा सकता है कि खरा है या खोटा, सोना सपने में हो तो, स्वप्न के सोने को परखने की कोई कसौटी नहीं है।

इसीलिये गरीब जब मंदिर जाता है तो धन मांगता है, पद मांगता है, बेटे की नौकरी नहीं लग रही, उसकी नौकरी लग जाए-ये मांगता है।

जिसका संसार में अभाव है, गरीब मन्दिर में भी उसे ही मांगता है।

लेकिन मेधा, प्रज्ञा इतनी प्रबल हो कि विचार करके व्यक्ति जाग सके और देख सके कि सब होता तब भी अन्तस् की रिक्तता नहीं भरेगी? दूसरे जिनके पास प्रत्येक समृद्धि है, उनकी भी भीतर की रिक्तता समृद्धि से कभी भी भर नहीं सकी है-यदि ये प्रतीति हो सके तो स्वयं के पास कुछ न होने पर भी व्यक्ति ये अनुभव कर लेगा कि संसार व्यर्थ है। लेकिन ये थोड़ा कठिन है। क्योंकि जिनके पास सब है उन्हें ही ये प्रतीति जल्दी हो नहीं पाती। तब ये सोचना कि जिनके पास नहीं है, उन्हें प्रतीति हो जाए ...।

ये संभावना तो है, लेकिन बड़ी दुर्लभ संभावना है। जीवन में जो मनुष्य के पास नहीं है, उसकी कामना प्रत्येक क्षण मनुष्य को घेरे रहती है। जो नही मिल सका है- किसी को पद-प्रतिष्ठा नहीं मिली है, किसी को प्रेयसी नहीं मिली है-तो मनुष्य और-और जन्म लेना चाहता है। अनंतः जन्म मनुष्य ले चुका है, प्रत्येक जन्म में कुछ न कुछ अभाव रह जाता है-उसी की पूर्ति के लिए अगला जन्म-और अगला जन्म।

वासनाएं दूष्पूर हैं।

जहाज मंदिर माण्डवला

की 18 वीं वर्षगाँठ की झलकियाँ

पूज्यश्री का छत्तीसगढ़ में विचरण

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा कोरबा से विहार कर ता. 28 मार्च को बिलासपुर पधारे। पूज्यश्री का सकल श्री संघ द्वारा भव्य प्रवेश करवाया गया। पूज्यश्री यहॉ दो दिन बिराजे। यहॉ जिन मंदिर की आवश्यकता की चर्चा की। पूज्य गुरु भगवंतों की प्रेरणा पाकर श्री सुधीरजी डाकलिया की ओर से एक विशाल भूखण्ड जिन मंदिर एवं उपाश्रय हेतु अर्पण किया गया।

पूज्यश्री ने भूखण्ड पर वासक्षेप डाला। श्री मुनिसुव्रत स्वामी परमात्मा का नाम मूलनायक हेतु निश्चित किया गया।

पूज्यश्री वहॉ से विहार कर ता. 31 मार्च को मुंगेली पधारे। मुंगेली श्री संघ द्वारा भव्य स्वागत किया गया। दूसरे दिन 1 अप्रेल को अठारह अभिषेक का आयोजन किया गया। विधि विधान श्री विमलजी गोलेच्छा, सचिन पारख रायपुर वालों ने करवाया।

श्री संघ का स्वामिवात्सल्य रखा गया। इस अवसर पर दुर्ग, रायपुर, बेरला, पंडरिया, कवर्धा, बिलासपुर, अहिवारा, दाढी, बेमेतरा आदि काफी स्थानों से संघों का आगमन हुआ।

ता. 1 अप्रेल की शाम को विहार कर पूज्यश्री नवागढ, बेमेतरा होते हुए ता. 4 को बेरला पधारे। पूज्यश्री का भव्य प्रवेश हुआ। श्री मुकनचंदजी बोथरा ने सपत्नीक आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार किया। श्री संघ की ओर से बहुमान किया गया।

पूज्यश्री बेरला से विहार कर अहिवारा होते हुए रायपुर पधारेंगे। ता. 7 को रायपुर में देवेन्द्रनगर में प्रतिष्ठा हेतु प्रवेश होगा।

श्री आदिनाथ प्रभु के जन्म व दीक्षा–कल्याणक का आयोजन

श्री आदिनाथ जैन मण्डल चुलै चैन्नई द्वारा श्री आदिनाथ भगवान का जन्म व दीक्षा कल्याणक एवं मण्डल का 38वां वार्षिकोत्सव धूमधाम पूर्वक मनाया गया। इस आयोजन निमित्त चुले स्थित मंदिरजी में भगवान आदिनाथ का शंख द्वारा विविध जडी-बुटियों से अखण्ड महाभिषेक चैन्नई में आदिनाथ जैन मण्डल द्वारा प्रथम बार करवाया गया। शंख द्वारा अखण्ड महाभिषेक के इस आयोजन को देखकर उपस्थित जनता एवं सम्पूर्ण माहौल धर्म से ओत-प्रोत हो गया। इस अभिषेक को बैंगलोर से पधारे कल्याणक ग्रुप के सदस्यों ने मन्त्रोच्चार द्वारा विधिविधान पूर्वक सम्पन्न करवाया। दोपहर में सामूहिक सामायिक का आयोजन किया गया।

शाम को कुमारपाल महाराजा बनकर 108 दीपक से आरती का लाभ श्रीमान देवराजजी, प्रकाशचंदजी, मदनचंदजी गोलेच्छा परिवार द्वारा लिया गया। परिवार के सदस्य 'महाविदेह' स्थित सीमंधर स्वामी मन्दिर से गाजते-बाजते जुलुस के रूप में चुलै मंदीरजी पहुँचे एवम् परमात्मा की आरती की। आरती के पश्चात् प्रभु भक्ति में बिकानेर राजस्थान से पधारे परमगुरु भक्त श्री पिण्टु स्वामी एवम् श्री सुनीलजी पारख ने प्रभु भक्ति का ऐसा समों बांधा की रात्री में लगभग 5 घण्टे तक उपस्थित जन-समुह ने प्रभु-भक्ति का श्रवण किया। मण्डल द्वारा सम्पुर्ण दिवस के आयोजन में चैन्नई में विभिन्न स्थानों से पधारे साधु-साध्वी भगवन्तो की निश्रा प्राप्त हुई। सम्पुर्ण दिवस में आयोजित कार्यक्रमों को देखकर उपस्थित जनता एवम् पुरा चुलै एरीया धर्ममय हो गया।

प्राचीन साहित्य

पुस्तक समीक्षा

-भाविन के. पण्ड्या

पुस्तक नाम	: क्षमाकल्याणजी कृति संग्रह
कुल भाग	: 2
संपादक	: आर्य मेहुलप्रभसागरजी
प्रकाशक	: आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट, जहाज मंदिर, मांडवला
पृष्ठ संख्या	: 344 (दोनों भाग के)
प्रकाशन वर्ष	: वि.सं. 2073 (ई.स. 2016)
मूल्य	: 100 रु. (सेट की कीमत)
विषय	: खरतरगच्छीय वाचक श्री अमृतधर्मजी गणी के शिष्य महोपाध्याय श्री क्षमाकल्याणजी विरचित कृतियों का एक विरल संग्रह

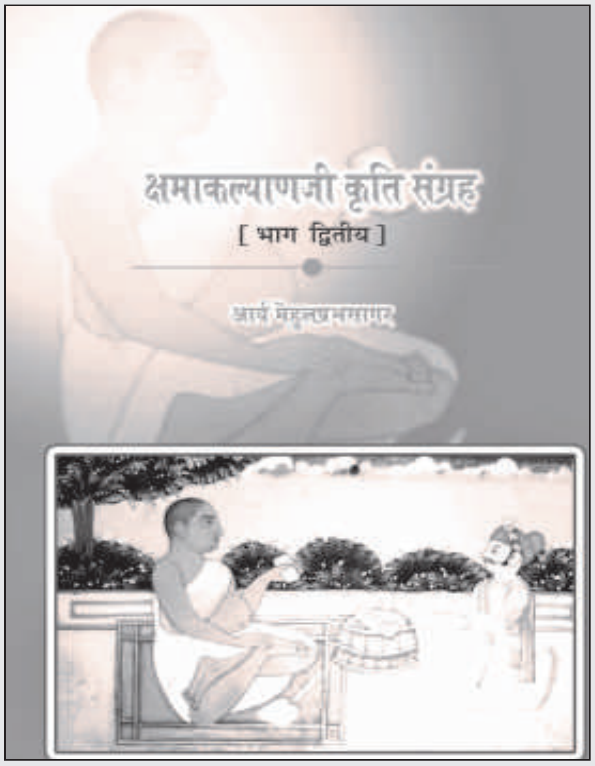

खरतरगच्छाधिपति परम पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा. के शिष्य आर्य मेहुलप्रभसागरजी द्वारा संकलित एवं संपादित 'क्षमाकल्याण कृति संग्रह' जैन साहित्य जगत के लिए एक अनुपम उपहार स्वरूप है। आर्य मेहुलप्रभसागरजी ने महोपाध्याय श्री क्षमाकल्याणजी म.सा. के स्वर्गारोहण द्वि-शताब्दी प्रसंग को एक प्रेरणा रूप में ग्रहण किया तथा भारतभर के विभिन्न ज्ञानभंडारों में संग्रहीत संबंधित कृतियों का संग्रह करके पूरी मनोज्ञता से संपादित किया और महोपाध्याय क्षमाकल्याणजी के द्विशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में पौष कृष्ण 14 विक्रम संवत 2073, 28 दिसंबर 2016 को ग्रंथ का विमोचन कराकर विद्वद् जगत के समक्ष प्रस्तुत किया। श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी, अहमदाबाद के आर्थिक सहयोग से इस ग्रंथ का प्रकाशन किया गया है।

महोपाध्याय श्री क्षमाकल्याणजी की कृतियों के संकलन-संपादन हेतु मुख्यरूप से पाँच ज्ञानभंडारों की हस्तलिखित प्रतियों का उपयोग किया गया- (1) श्री जिनहरिसागरसूरि ज्ञानभंडार, पालीताना, (2) श्री जिनभद्रसूरि ज्ञानभंडार, जैसलमेर, (3) आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा, गांधीनगर, (4) राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर-बीकानेर, (5) लालभाई

दलपतभाई भारतीय प्राच्यविद्या संस्थान, अहमदाबाद।

महोपाध्याय श्री क्षमाकल्याणजी म. का समय वि.सं. 1801 से वि.सं. 1873 तक का माना जाता है। उन्होंने अपने जीवनकाल में अनेक महत्वपूर्ण कृतियों की रचना की। आचार्य श्री जिनहरिसागरसूरिजी ने जैसलमेर व जयपुर के ज्ञानभंडारों में संग्रहीत हस्तलिखित प्रतियों में उपलब्ध कृतियों में से 60 गेय कृतियाँ व महोपाध्याय श्री क्षमाकल्याणजी के जीवनचरित्र का प्रकाशन करवाया था।

इस ग्रंथ में संपादक आर्य मेहुलप्रभसागरजी के गुरु गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी द्वारा लिखित विशिष्ट प्रस्तावना (वन्दे क्षमाकल्याणम्) में महोपाध्यायजी के जीवनचरित्र को विस्तारपूर्वक वर्णित किया गया है। इसमें उनके साधनाकाल, व्यक्तित्व, कृतित्व आदि का वर्णन करते हुए भक्तिपरक, विधि-विधानपरक, सैद्धांतिक, इतिहासपरक व कथासाहित्य आदि विषयक कृतियों का परिचय दिया गया है।

प्रथम भाग के अंतर्गत महोपाध्यायजी की भक्तिपरक चैत्यवंदन, स्तुति, स्तवनादि 114 कृतियों का संग्रह दिया गया है. जिसमें उनकी 2 स्तुति चतुर्विंशिका वाचकों के लिए आकर्षण का केन्द्र हैं, उसके साथ ही विभिन्न ऐतिहासिक शत्रुंजयादि तीर्थमंडन तीर्थंकरों की स्तुतियाँ, स्तवन व जिनदत्तसूरि, जिनकुशलसूरि, जिनभक्तिसूरि, जिनलाभसूरि, वाचनाचार्य अमृतधर्मादि गुरुभगवंतों के विविध अष्टक भी समाविष्ट हैं। परिशिष्ट में उनके गुणों को दर्शाने वाली तथा व्यक्तित्व को उजागर करती हुई 5 कृतियाँ भी द्रष्टव्य हैं।

द्वितीय भाग में सर्वप्रथम महोपाध्यायजी द्वारा वि.सं. 1830 में रचित इतिहासपरक संस्कृतभाषा में निबद्ध अतिविस्तृत कृति 'खरतरगच्छीय पट्टावली' दी गई है, फिर चतुर्विध संघ के लिए आवश्यक ऐसे दो प्रकरण 'साधुविधिप्रकाश प्रकरण' व 'श्रावकविधिप्रकाश प्रकरण' को समाविष्ट किया गया है, जिसमें प्रतिक्रमणादि विधियों का सुंदरतम् निरूपण किया गया है। श्रावकविधि प्रकाश के अंत में कठिन शब्दों की सूचि भी अर्थसहित दी गई है। महोपाध्यायजी द्वारा प्रतिक्रमण की हर विधि के कारण को स्पष्ट करके उसकी उपयोगिता को निरूपित करने वाली कृति 'प्रतिक्रमण हेतव:' को भी सम्मिलित किया गया है। अंत में महोपाध्यायजी प्रणीत 'सूक्तरत्नावली' के रूप में जैन सिद्धांतों को आवेष्टित करती सूक्तियों को स्थान दिया गया है।

प्रस्तुत ग्रंथ समस्त जैनसंघ के लिए बहुत ही उपादेय व श्रेयस्कर सिद्ध हो रहा है। आर्य श्री मेहुलप्रभसागरजी ने इस ग्रंथ को प्रकाशित कराकर शोधार्थी वर्ग के लिए सामग्री तो उपलब्ध कराई ही है, साथ ही जैन साहित्य को भी समृद्ध भी किया है। उनके प्रयास के कारण ही आज महोपाध्याय श्री क्षमाकल्याणजी की कृतियों का संग्रह हमें प्राप्त हुआ है। आर्य श्री मेहुलभप्रसागरजी भविष्य में भी इसी तरह श्रुत की सेवा करते रहें तथा युगयुगांतर तक उनके द्वारा रचित, संपादित, संग्रहीत कृतियाँ सुरक्षित रहें व समग्र जैनसमाज लाभान्वित होता रहे, ऐसी शासनदेव के श्रीचरणों में प्रार्थना सह शुभेच्छा।

श्रुतसागर, कोबा मार्च 2017 से साभार

श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ के बोथरा अध्यक्ष चुने गये

श्री जैनश्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ का त्रिवार्षिक चुनाव विगत दिनों श्री आदिनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर सदर बाजार में सम्पन्न हुए जिसमें सर्वसम्मति से युवा कार्यकर्ता श्री कांतिलाल बोथरा को अध्यक्ष पद हेतु चुना गया। श्री प्रवीण लोढ़ा, मनीष बोथरा, विमलेश कोचर उपाध्यक्ष, पदम बरड़िया महामंत्री, सहमंत्री हेतु मनीष दुग्गड़, अमृत लोढ़ा, प्रवीण गोलछा एवं कोषाध्यक्ष पद पर प्रेमचंद लोढ़ा को चुना गया। कार्यकारिणी सदस्य के रुप में जेठमल दुग्गड़, ज्ञानचंद कोठारी, भीखमचंद कोठारी, बाबूलाल दुग्गड़, भंवरलाल पोरवाल, संतोष लोढ़ा, सुरेश कोठारी, राजेन्द्र मरोटी, महावीर लोढ़ा, अशोक दुग्गड़, पारस झाबक, दिलीप मरोटी आदि चुने गये।

प्राचीन साहित्य श्रेणी 3

परमात्मा महावीर जन्मकल्याणक पर
जयसागरोपाध्याय विरचिता

श्री महावीर विनती

संपादक : मणिगुरु चरणरज
आर्य मेहुलप्रभसागर

कृति परिचय,

तीर्थंकर परमात्मा की आराधना चतुर्विध संघ में सामूहिक एवं व्यक्तिगत रूप से प्रतिदिन अनेक बार की जाती है। वे हमारे साध्य हैं। उनकी आराधना के द्वारा हमें उनके जैसा बनना है।

उत्तराध्ययन सूत्र में परमात्मा महावीर ने स्तवन करने से जीव क्या प्राप्त करता है?इसके उत्तर में फरमाया है–

थयथुइमंगलेणं भंते! जीवे किं जणयइ?

थयथुइमंगलेणं नाणदंसण– चरित्तबोहिलाभं जणयइ। नाणदंसण चरित्तबोहिलाभसंपण्णे य जीवे अंतकीरियं कप्पविमाणोववत्तियं आराहणं आराहेइ।

अर्थात् स्तव, स्तुति मंगल से जीव को ज्ञान, दर्शन, चारित्र, बोधिलाभ की प्राप्ति होती है एवं ज्ञान, दर्शन, चारित्र, बोधिलाभ से युक्त आत्मा आराधनायुक्त बनता है। उस आराधना से अंत:क्रिया मोक्ष को प्राप्त करता है, भवितव्यता परिपक्व न हुई हो तो सौधर्मादि वैमानिक देवलोक में आरोहण करता है फिर मुक्ति सुख को प्राप्त होता है।

प्रस्तुत महावीर विनती स्तवन में उपाध्याय प्रवर श्री जयसागरजी महाराज ने अपभ्रंश भाषा में परमात्मा को अनेक उपमाओं के द्वारा मंडित करते हुए वंदना की है। भाषा लालित्य की दृष्टि से यह कृति मनोहर है। सरल व सरस होने से सामूहिक गेय भी है। स्तवन का संक्षिप्त सार इस प्रकार है–

चौसठ इंद्र जिनकी नित्य सेवा करते है ऐसे श्री वीर जिनेश्वर देव की जय हो, मिथ्यात्व और भ्रम को दूर करने व कल्याण की प्राप्ति के लिए आपके चरणों में नतमस्तक हूँ।

कोटि भवों में भटकते हुए जीवों को तारने वाले, विषम अंधकार को नष्ट करने में सूर्य के समान परमात्मा महावीर स्वामी सज्जनों के लिए आशास्थान हैं।

सकल दु:ख रूपी ताप को हरने वाले, प्रवर संवर को धारण करने वाले, भव्य जनों रूपी मोर के समूह के लिए प्रमोदकारक और कल्याण–सुख–संपदा रूपी लता को बढाने वाले जलधर के समान परमात्मा महावीर की जय हो।

भव–भव में घूमते हुए जन–प्रवाह के वशीभूत मैंने झूठ–कपट अनेकों बार किये, अब आपके चरणों में आया हूँ कृपा कर मुझ पर सौम्य दृष्टि कीजिये।

चार गति रूप संसार में घूमते हुए दोषवश अनेक दु:खों को सहन किया, उन दु:खों को हीन बातें आपको कैसे कहूँ! कर्म की गति को धिक्कार हो।

क्षण में रागी, क्षण में विरागी, क्षण में मदन में मत्त तो दूसरे क्षण में दु:खी ऐसा कषाय रूपी मोहनीय कर्म से छलित होकर चक्र की तरह स्वर्ग, पाताल, योनि, जाति, कुल आदि कोई स्थान नहीं जहां पूर्व कर्मों के कारण भ्रमण नहीं किया हो।

जग को शरण देने वाले आपको प्राप्त कर अब मेरी सफल आशा है कि आप भव रूपी दु:खजाल को नष्ट करोगे।

नानाविध भवों में भटकते हुए एकमात्र आपको देव के रूप में देखा है, आपके चरण रूपी कमलों में आया हूँ, अब मुझे भवसागर से पार कीजिये।

सुलसा, रेवती और श्रेणिक को आपने अपनी ऋद्धि प्रदान की। आपका संगम निष्फल नहीं हो सकता अत: मुझे भी एक बार वैसी सिद्धि दीजिये।

आषाढ सुदि षष्ठी को च्यवन से और चैत्र शुक्ला त्रयोदशी की रात्रि को जन्म से जगत में आनंद हुआ। मार्गशीर्ष कृष्णा दशमी को चारित्र अंगीकार किया। वैशाख शुक्ला दशमी के दिन केवलज्ञान की संपत्ति को प्राप्त किया।

कार्त्तिक अमावस्या को शिव–रमणी के साथ आपने पाणिग्रहण किया, उस शिव–रमणी को मात्र एकबार देखने की उत्कट अभिलाषा है, कृपा कर मेरी अभिलाषा पूर्ण कीजिये।

इस प्रकार वीर जिनेश्वर का स्तवन करने से मेरा पूरा दिन सफल हुआ। उनके चरणों में जो वंदन करते है वे बोधिलाभ को प्राप्त कर चिरकाल तक आनंद करते हैं।

कर्ता परिचय

उपाध्याय जयसागरजी महाराज खरतरगच्छाचार्य श्री जिनराजसूरीश्वरजी महाराज के सुशिष्य थे। इनका आचार्य पद काल वि.सं. 1433 से 1461 तक का है। अत: उसी समय आपकी दीक्षा उनके कर-कमलों से संपन्न हुई। संवत् 1475 में श्रुतसंरक्षक आचार्यों में मुर्धन्य श्री जिनभद्रसूरीश्वरजी महाराज ने आपको उपाध्याय पद से विभूषित किया।

आप सुकवि, गीतार्थ, प्रभावक थे। लक्षण साहित्य के आप विद्वान थे। संवत् 1503 पालनपुर में रचित पृथ्वीचंद्र चरित में आपने अपनी दीक्षा, विद्या और पददाता गुरुओं का उल्लेख किया है-

तत्पट्टशाद्वलवक्ष:स्थलकौस्तुभसन्निभ:।

श्रीजिनराजसूरीन्द्रो योऽभूद्दीक्षागुरु र्मम।।3।।

तदनु च श्रीजिनवर्द्धनसूरि: श्रीमानुदैदुदारमना:।

लक्षणसाहित्यादिग्रन्थेषु गुरु र्मम प्रथित:।।4।।

श्रीजिनभद्रमुनीन्द्रा: खरतरगणगगनपूर्णचन्द्रमस:।

ते चोपाध्यायपदप्रदानतो मे परमपूज्या:।।5।।

आपकी गृहस्थ अवस्था का परिचय अर्बुद प्राचीन जैन लेख संदोह भाग-2 के शिलालेख क्रमांक 442, 449, 455, 456, 457 और पाटण जैन धातु प्रतिमा लेख संग्रह के शिलालेख क्रमांक 552 के अनुसार ओसवाल दरड़ा गोत्रीय संघपति खीमसिंह के पुत्र हरिपाल की पत्नी सीता के पुत्र आसराज की भार्या सोषू के आप पुत्र थे। संघपति मंडलिक जिसने आबु महातीर्थ पर खरतरवसही नामक जैन मंदिर का निर्माण करवाया, वे आपके गृहस्थावस्था के भाई थे।

लेखांक 455 द्रष्टव्य है-

।। सं० 1515 वर्षे आषाढ वदि 1 शुक्रे श्रीअर्बुदगिरिमहातीर्थे ..... तत्पुत्र हरिपाल भा० सीतादे पुत्र सा० आसराज भार्या सोषू तत्पुत्र श्रीजयसागरोपाध्यायबांधवेन संघाधिपतिमंडलिकेन ..... परिवारसहितेन श्रीनवफण पार्श्वनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगच्छाधीश्वर श्रीजिनभद्रसूरि-पट्टालंकार श्रीजिनचंद्रसूरिभि:।।

आपके द्वारा रचित संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और मरुगुर्जर भाषा में अनेक कृतियां प्राप्त होती है। जिनमें सं.1478 में पाटण में रचित पर्वरत्नावली, संदेह दोहावली टीका, गुरुपारतंत्र्य वृत्ति, उपसर्गहर वृत्ति, भावारिवारण वृत्ति, नेमिजिन स्तुति टीका, उक्ति समुच्चय सहित अनेक ग्रंथ प्राप्त होते हैं।

गेय रचनाओं में गिरनार, खंभात, मांडवगढ, शंखेश्वर, मरुकोट, नागद्रह, जीरापल्ली, नगरकोट्ट सहित विविध चैत्यपरिपाटी स्तव, नानाविध विनती स्तवन, जिनकुशलसूरि सप्ततिका, वयरस्वामी रास, गौतमस्वामी चतुष्पदिका, नेमिनाथ विवाहलो, अर्बुद तीर्थ विज्ञप्ति, पंचवर्गपरिहार पार्श्व स्तोत्र सहित पचासों रचनाओं से आपने साहित्य को समृद्ध किया।

संघपति अभयचंद्र के निकाले हुए यात्रासंघ के साथ आपने मरुकोट महातीर्थ की यात्रा की। फरीदपुर नगर में आपने कई ब्रह्म-क्षत्रियों को जैन बनाया, सिंधु-पंजाब आदि प्रदेशों में जैन धर्म का प्रसार, अप्रसिद्ध तीर्थ इत्यादि अनेक वृत्तांत से गुंफित विस्तृत वर्णन वाला पत्र विज्ञप्ति त्रिवेणी के नाम से रचकर संवत् 1484 माघ सुदि 10 को आचार्य जिनभद्रसूरिजी महाराज को भेजा था। जो प्रकाशित है। तत्कालीन अनेक नगरों और तीर्थों के नाम इस पत्र में प्राप्त होते हैं।

आचार्य श्री जिनभद्रसूरिजी महाराज के श्रुतसंरक्षण के भगीरथ कार्य में उपाध्याय जयसागरजी महाराज का भी पूरा सहयोग रहा था।

आपकी शिष्य परंपरा विशाल रही है। शिष्यों में मेघराज गणी, सोमकुंजर, रत्नचंद्रोपाध्याय आदि नाम सुविख्यात हैं। शिष्य परंपरा में भक्तिलाभोपाध्याय, पाठक चारित्रसार, ज्ञानविमलोपाध्याय, श्रीवल्लभोपाध्याय आदि अनेक विद्वान हुए हैं।

प्रति परिचय

श्री महावीर विनती स्तवन नामक हस्तलिखित कृति की प्रतिलिपि पंडित प्रवर डॉ. जितेन्द्रभाई बी. शाह के द्वारा लालभाई दलपतभाई भारतीय विद्या मंदिर अहमदाबाद से प्राप्त हुई है। एतदर्थ वे साधुवादार्ह हैं। पूज्यश्री पुण्यविजयजी संग्रह के प्रति क्रमांक 3420 में पूज्य जयसागरजी महाराज की अनेक रचनाओं का पडिमात्रा में सुवाच्य अक्षरों व मध्य वापिका के साथ लेखन किया हुआ है। प्रति का प्रथम पत्र एवं दस के बाद के पत्र संभवत: अनुपलब्ध हैं। प्रति लेखक विद्वान मुनिराज रहे होंगे। लेखन प्राय: पंद्रहवीं या सोलहवीं शताब्दी का प्रतीत होता है। उपरोक्त प्रति के पत्र संख्या 6 पर यह कृति लिखित है। खरतरगच्छ साहित्य कोश में इस कृति का उल्लेख संख्या 2064 पर है।

जयसागरोपाध्याय विरचिता

श्री महावीर विनती

जय जय वीर जिणेसर देव,

चउसठि इंद्र करइ नितु सेव।
श्रेय काजि तानुय पइ लागउ,
अलविहिं मिथ्या तह भ्रम भागउ।।1।।
भाग सोभाग संभाग फल कारणो,
विकट भव कोटि भय भीरू जण तारणो।
तरुण रवि बिंब जिम विसम तम नासणो,
सुहइ सिरि वीरजिण सुजण आसासणो।।2।।
सयल दुह तापहर पवर संवरधरो,
भवियण मोर गण मण पमोयंकरो।
श्रेय सुख संपदा वेलि वद्धारणो,
जयउ जगि वीर जिण जलद साधारणो।।3।।
भास
साधारण सवियह सत्तु मित्त,
परु हसिय हं पिय हर एगचित्त।
अडवडिय हं मुझ आधार एहु,
प्रभु आणिनु आणिनु भवह छेहु।।4।।
हउं भमि भमि भागउ भवह मांहि,
मइं कूड कपट किय करि जण प्रवाहि।
हिव आविय तुय पहु पाय हेठि,
मुय सामुहिं करि करि सोम द्रेठि।।5।।
भास
अणो वारि संसारि चउगइ फिरंता,
सहिया दोष वसि दुक्ख जे मइं अणंता।
किसुं ते कहु आपणी वात हीणी,
हहा कर्मनी धाडि धिग जउ न खीणी।।6।।
क्षणं रागि रातउ क्षणं मयणि मातउ,
क्षणं दुखि तातउ क्षणं भवि विरातउ।
कषाए मिली एम आवर्त्ति पाडिउ,
न को वइरि ए छल लही चक्रि चाडिउ।।7।।
न ते देव दोसा न ते पाप पोसा,
न ते सास सोसा न ते मर्म्म मोसा।
न जे देव मूं केड मेल्हइ लगार,
मरे मोहणी कर्म्म केरउ विकार।।8।।
न तं सग्गि पातालि आगासि ठाणं,
न सा योनि जाई कुलं तं पहाणं।
असंखे परे कर्म्म नइ मर्म्मि भेलिउ,
जिहां देव हउं नवनवी परि न खेलिउ।।9।।
भास
तउ जगजीवन जगसरण, चूरइ भव दुहपास।
ते तउं मइं पामिय कटरि(करि),
पूरि अम्हारिय आस।।10।।
नव नव परिभवि भमत मइं,
इकु तउं दीठउ देव।
तावि लगउ तुय पय कमलि,
तारि तारि मु हेव।।11।।
सुलसा रेवति श्रेणियहं,
तइं दीधी निजि सिद्धि।
तुय संगम निप्फल नहिय,
तिम मूं पुणि दइ सिद्धि।।12।।
आषाढ हसिय छट्ठि दिणि,
चवियउ चरम जिणिंद।
चैत्र धवल तेरिसि निसिहिं,
जंमणि जग आणंद।।13।।
मग्गसिरह सामल दसमि,
आदरियउं चारित्त।
वइसाहह ऊजल दसमि,
वर केवल संपत्त।।14।।
कातिय मावसि सिव रमणि,
जे तइं परिणिय सार।
तिह जोवानि खंति मह,
पूरि तुं प्रभु इकुवार।।15।।
इय मइ वीर जिणेसर थुणियउ,
ताम सफल दिन एहु जु गणियउ।
तसु पय जे जइसायरु वंदइं,
बोधिलाभ गुणि ते चिरु नंदइं।।16।।
इति श्री महावीर विनती

–श्री जिनहरि विहार धर्मशाला, तलेटी रोड़
पालीताना 364270 गुजराज

स्मृति शेष

परम सेवाभावी श्रावक

श्री घमंडीरामजी प्रतापमलजी ललवाणी

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

परम सेवाभावी श्रद्धालु श्रावक निवासी श्री घमंडीरामजी प्रतापमलजी ललवाणी का 84 साल की उम्र में 18.3.2017 को शांति समाधि के साथ स्वर्गवास हो गया।

उनके स्वर्गवास के समाचार इचलकरंजी निवासी रमेश लुंकड़ द्वारा पू. आचार्य देवेश खरतरगच्छाधिपति श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. को प्राप्त हुए। आचार्य देवेश ने अपनी संवेदना प्रकट करते हुए कहा- बासा हमारे अत्यंत आदरणीय स्नेहमूर्ति एवं उपकारी व्यक्ति थे। वे सांसारिक संबंध से हमारे पिताजी के मामा थे। वैसे सभी साधु संतों के प्रति उनकी वैयावच्च भावना अनुमोदनीय थी पर हमारे प्रति उनका श्रद्धाभाव संबंध के कारण और भी अधिक स्नेहिल था।

उनकी बड़ी बहिन धन्नीदेवी जो कि हमारे दादीजी थे, उन्हें अंतिम समय में टी.बी. हो गया था। उस समय इस बिमारी की कोई दवा नहीं थी, साथ ही इसके प्रति बहुत ज्यादा ही भयग्रस्त मानसिकता थी। दादीजी की उस बीमारी में भी उन्होंने अत्यंत निर्भय होकर सेवा की थी। रात दिन उनके पास रहने में उन्होंने कभी गुरेज नहीं किया।

बहिन की मृत्यु के बाद बहिन के चारों पुत्र ननिहाल आ गये। ननिहाल में सभी को नानी की मीठी छॉव तो मिली ही साथ ही मामा का भी अत्यंत गहरा प्रेम मिला। चारों भाणेज की भी जरूरत पर सेवा का दायित्व बासा पर ही विशेष रूप से रहता था।

पिताजी की सामान्य सी बिमारी ने उग्ररूप धारण कर लिया और अंत में वह जानलेवा ही साबित हुई। उनके स्वर्गवास के बाद भी हमारे प्रति वात्सल्य भाव कम होने की अपेक्षा बढ गया।

हमारे माताजी उनके परिवार का अभिन्न हिस्सा रहे। हमारी अचानक दीक्षा से वे और उनका परिवार नाराज अवश्य हुए पर बीतते समय के साथ उनकी नाराजगी कम होती गयी और धीरे-धीरे वे दीक्षित अवस्था में भी पुन: हमसे अभिन्न होते गये।

अभी जब 2013 फरवरी में हम बाड़मेर से सीधे सिवाना रोड होकर चंपावाडी पहुँचे तो बा उस समय सिवाना ही थे। चूंकि हमारे विहार अत्यंत उग्र थे अत: हम हाथों हाथ दर्शन करके मोकलसर की ओर प्रस्थित हो गये। बा को जैसे ही हमारे आने का पता चला, वे अपनी एक्टिवा लेकर हमारे पीछे-पीछे आ गये।

हम उस समय मवड़ी विश्राम कर रहे थे। ज्योंहि हमने बा को देखा हम आनंद से भर गये पर ज्योंहि उनके

चेहरे को गौर से देखा, मन को ठेस लगी। उनके चेहरे पर खून के निशान थे।

मैंने पूछा-क्या हुआ?उनका दिया गया उत्तर आज भी मन को पुरुषार्थ और साहस की प्रेरणा देता है।

उन्होंने अत्यंत शांति से कहा-कुछ नहीं। आ रहा था और साईड देने के प्रयास में एक्टिवा स्लिप हो गयी। काफी चोटें उनके शरीर पर थी। घुटना भी काफी छिल गया।

सीने में भी अंदर की मार थी पर उन्हें अपनी चोट का अहसास कम और दर्शन का आनंद ज्यादा था।

बहिन म. ने कहा भी- यहाँ से आपको कोई भी सिवाना छोड़ देगा। आप गाडी मत चलाना। तुरंत उन्होंने कहा- इतनी मन को कमजोर करने वाली बात कर रहे हैं। आपके दर्शन की तमन्ना थी अत: सोचा- पहले दर्शन कर लूं। बस अब यहाँ से सीधे डाक्टर के पास मैं खुद आराम से चला जाऊंगा। आपके दर्शन करने दूर तो आ नहीं सकता पर निकट आने पर रहा भी नहीं जाता। इतनी पीड़ा के बावजूद उनकी मुस्कान यथावत् थी।

उन्हें जहाँ भी प्रेरणा दी लाभ लिया। चाहे अवन्ति तीर्थ हो चाहे जहाज मंदिर। चाहे कुशलवाटिका हो या जिनेश्वर भवन स्थित मंदिर सभी में उन्होंने लाभ प्राप्त किया।

उनके स्वर्गवास से हमारी बहुत बड़ी क्षति हुई है। उनकी आत्मा को शांति एवं अक्षय सुख की प्राप्ति हो।

परम पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभा श्रीजी म.सा. ने कहा- आज उनके स्वर्गवास से हमने उनकी पीढी का अंतिम व्यक्ति तो खोया ही है पर एक अपना आत्मीय एवं संवेदनशील व्यक्ति भी खो दिया है। बचपन में मैंने उनका अनुशासनयुक्त भरपूर वात्सल्य पाया। वे परम सेवभावी एवं स्वच्छता प्रेमी व्यक्ति थे। सेवा तो जैसे उनकी रग-रग में रमी हुई थी। परिवार में किसी की सेवा करने में वे कभी नहीं चूके पर अपनी सेवा उन्होंने कभी नहीं करवायी।

अपनी धर्मपत्नी अ.सौ. सुश्राविका शांतिदेवी के स्वर्गवास के पश्चात् उनकी संसार के प्रति उदासीनता और गहरी हो गयी थी। उन्होंने अपनी सारी चल अचल संपत्ति गोशाला में लगाने की वसीयत लिखते हुए उसकी जिम्मेदारी भतीज श्री मोतीलालजी, पारसमलजी, सूरजमलजी, आदि को सौंप दी थी।

जीवदया में उनकी गहरी रूचि थी। प्रत्येक माह उनकी ओर से गोशाला में यथाशक्ति चारे की व्यवस्था होती थी।

जितने वे सेवाभावी थे उतने ही वे दबंग एवं निर्भीक थे। परिवार एवं अपने क्षेत्र में उनकी कही बात अत्यंत सम्मान से सुनी जाती थी।

अपने जीवन में उन्होंने जीवदया और सेवा द्वारा जो शाता देकर शुभ कर्म का उपार्जन किया उसी का परिणाम था कि अंतिम समय में उन्हें कोई कष्ट नहीं हुआ।

उन्हें जब भी जरूरत हुई भतीज श्री मोतीलालजी, पारसमलजी, सूरजमलजी सदैव सेवा के लिये तत्पर रहे। उनकी आत्मा जहाँ भी हो शांति मिले और अतिशीघ्र शुद्ध और मुक्त बने।

केयुप की गाजियाबाद शाखा का गठन

अत्यंत हर्ष का विषय है कि वर्तमान गच्छाधिपति आचार्य भगवंत गुरुदेव श्री जिनमणिप्रभ सूरीश्वरजी म.सा. व पूज्या साध्वी डॉ. लक्ष्यपूर्णा श्रीजी म.सा. के आशीर्वाद से रविवार दिनांक 25 मार्च 2017 को गाजियाबाद (उ.प्र.) में श्री अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद की एक और शाखा का गठन हुआ जिसमें उन्होंने अपनी कार्यकारिणी निर्धारित की। केयुप के उद्देश्यों को शिरोधार्य करते हुए शासन की सेवा करने की शपथ ली। जिसमें संरक्षक- श्री देवेन्द्रजी सुराणा

अध्यक्ष- श्री मनीषजी जैन (लोढ़ा), उपाध्यक्ष- श्री सुनीरजी जैन, महामंत्री- श्री समितजी जैन (सुराणा),मंत्री- श्री सचिनजी जैन (सुराणा), कोषाध्यक्ष- श्री संजीवजी जैन, प्रचार मंत्री- श्री अरूणजी कोचर चुने गये।

प्रेषक मनीष नाहटा (अध्यक्ष) केयुप दिल्ली शाखा

स्मृति शेष

पूजनीया गुरुवर्याश्री के संस्मरण

बहिन म. साध्वी
डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

गुरूवर्या श्री के जीवन में एक अत्यंत गहरी मानसिक व्यथा आजीवन रही। वह व्यथा बीतते समय के साथ कम होने की अपेक्षा नासूर बनकर उन्हें आहत करती रही। उन्हें अपनी गुरुवर्या श्री सिंह श्रीजी म.सा. का अत्यंत अल्प सान्निध्य मिला। गुरुवर्या श्री को दीक्षित कर दूसरे ही दिन प.पू. सिंह श्रीजी म.सा. का अजमेर की ओर प्रस्थान हो गया था। गुरुवर्या श्री की सार संभाल एवं उन्हें संयमी जीवन आत्मस्थ करने में प.पू. श्री विमल श्रीजी म.सा. का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

प.पू. समुदाय संचालिका श्री सिंह श्रीजी म. ने ही गुरुवर्या श्री को विमल श्रीजी म.सा. को सौंपते हुए उनके अध्ययन अध्यापन की जिम्मेदारी देते हुए कहा था- ऐसी अनूठी प्रज्ञा अत्यंत अल्प लोगों में पायी जाती है। इसके पास समय भी है। अगर इसे अनुकूल वातावरण प्राप्त हो जाय तो यह जिनशासन का बेशकीमती हीरा हो सकता है।

पू. विमल श्रीजी म. ने इस बात को जैसे पी लिया। उन्होंने इस हीरे को तराशने में अपना सारा पुरूषार्थ एवं शक्ति नियोजित कर दी। गुरुवर्या श्री अंतिम सांस तक पू. विमल श्रीजी म.सा. के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए उन्हें ज्ञानदात्री गुरुवर्या श्री के रूप में रेखांकित करते थे।

दीक्षा का प्रथम चातुर्मास फलोदी में ही था। चातुर्मास के बाद अचानक शाम के समय प.पू. सिंह श्रीजी म.सा. की

गुरुवर्या श्री लक्ष्मी श्रीजी म.सा. ने कहा- आज मुझे आकाश में शिवी का विमान जाते हुए दिखा है। मुझे ऐसा लगता है, शिवी अस्वस्थ है और अल्प समय में ही उसकी जीवन यात्रा सिमटने वाली है, ऐसा कहते-कहते उनका गला रूंध गया।

पू. लक्ष्मी श्रीजी म. उच्चकोटि की साधिका थी। उनकी भविष्यवाणी मिथ्या नहीं हो सकती थी। पूरे साध्वी मंडल में एक भय की लहर व्याप्त हो गयी। गुरुवर्या श्री लक्ष्मी श्री जी म.सा. की आज्ञा से प.पू. विमल श्रीजी म. सा. ने नवदीक्षिता माता-पुत्री के साथ अजमेर की ओर विहार कर दिया। उस समय संचार व्यवस्था का तो संपूर्ण अभाव था ही पर आवागमन के साधन भी अत्यंत कम थे।

प. पू. विमल श्रीजी म.सा. गुरु चरणों में पहुँचने के लिये उग्र विहार कर रहे थे। मेरी गुरुवर्या श्री का नाजुक शरीर ... छोटी सी उम्र ... प्रथम विहार.... निर्दोष गोचरी का ही आग्रह पर गुरु विमल... गुरु दर्शन ... गुरु भक्ति की तीव्र ललक के सामने ये सारी प्रतिकूलताएं फीकी पड़ गयी। उनकी तो एक ही रट थी, बस जल्दी पहुँचो।

प. पू. समुदाय संचालिका सिंह श्रीजी म.सा. के चरणों में जब तक गुरुवर्या श्री पहुँचे, उनकी अंतिम घड़ियाँ आ चुकी थी। उन्होंने अपनी प्रिय शिष्याओं को देखा और हित शिक्षा देते हुए संयमी जीवन में अत्यंत सावधानी रखने की प्रेरणा रूप पाथेय दिया। गुरुवर्या श्री अपनी गुरुवर्या श्री का स्मरण करते हुए अत्यंत भावविभोर हो जाते थे। वे एक घटना की चर्चा अक्सर करते थे। वे कहते थे- जिस दिन गुरुवर्या श्री का स्वर्गवास हुआ, उसी दिन मैं और मेरी बडी गुरु बहिन प.पू. प्र. श्री वल्लभ श्रीजी म.सा. जो मेरे समवयस्क ही थे, एक कक्ष में रोते बिलखते ही सो गये थे। अचानक कक्ष प्रकाश से भर गया। हमने अपनी आँखें खोली, हमारे सामने गुरुवर्या श्री आशीर्वाद की मुद्रा में खड़े थे। हम तुरंत वंदना की मुद्रा में खडे हो गये। हमने शिकायती लहजे में निवेदन किया- आपने हमारे साथ इतना बड़ा धोखा क्यों किया?आप हमको छोड़कर क्यों चले गये?

गुरुवर्या श्री की वात्सल्य छलकती आवाज सुनायी दी- बेटा! मै कहीं गयी नहीं हूँ। मैं तुम्हारे ही अन्तर्मन में आत्मस्थ हुई हूँ। मेरा आशीर्वाद सदा तुम्हारा कल्याण करेगा।

गुरुवर्या श्री को आजीवन इस बात का दर्द रहा कि उन्हें गुरुकुलवास नहींवत् प्राप्त हुआ पर इस बात का संतोष भी उन्हें उतना ही था कि उन्हें गुरुकृपा सदैव उपलब्ध रही।

जब गुरुवर्या श्री मालवा प्रांत में विचरण कर रहे थे, उस समय मालवा प्रांत उनके प्रति पूर्ण समर्पित था। आपके आगमों का तलस्पर्शी ज्ञान सभी के लिए चकित करने वाला था। जब आपश्री उज्जैन पधारी तो उज्जैन स्थित शांतिनाथ मंदिर की जीर्ण-शीर्ण स्थिति देखकर आपका भक्त मन व्यथित हो गया।

आपश्री ने स्थानीय संघ को जीर्णोद्धार की प्रेरणा दी। संघ ने परस्पर विचार विमर्श कर आपश्री की प्रभावी निश्रा में मंदिर जीर्णोद्धार का निर्णय लिया। उस मंदिर की जीर्णोद्धार लागत लगभग उस समय एक लाख की आयी थी।

जीर्णोद्धार की आर्थिक व्यवस्था काफी चैन्नई से हो गयी थी। चैन्नई से अर्थसंग्रह में परम निष्ठावान् श्रावकवर्य श्री लालचंदजी ढड्ढा का बहुत बड़ा योगदान था।

जब मैं लगभग 20 साल पूर्व गयी थी, उस समय मंदिर में लगे शिलालेख ने अचानक मेरा ध्यान खिंचा था। उस शिलालेख ने मुझे गहरी प्रेरणा दी थी।

समाचार दर्शन

पूज्यश्री का कोरबा में भव्य स्वागत

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य मुनिराज श्री मनितप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. ठाणा 3 एवं पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा राजगृही प्रतिष्ठा करवाकर विहार कर गया, बोधगया, भद्दिलपुर, चतरा, गुमला, जसपुर, कुनकुरी, पत्थलगांव, धरमजयगढ होते हुए 23 मार्च 2017 को कोरबा पधारे। ट्रान्सपोर्ट नगर में श्री गौतमचंदजी मुकेशकुमारजी कोचर के घर बिराजे। ता. 24 मार्च को पूज्यश्री जैन भवन पधारे। श्वेताम्बर श्री संघ समस्त कोरबा द्वारा पूज्यश्री का भव्य स्वागत किया गया। प्रवचन फरमाते हुए पूज्यश्री ने कहा- सुख वह है जो सदा का हो। उन्होंने कहा- असली सुख आत्मा में ही है। संयोग या वियोग के कारण प्राप्त होने वाला सुख सदा का नहीं होता। उसका अन्त निश्चित है। पूज्यश्री ने कहा- कोरबा संघ की यह विशेषता है कि यहाँ श्री संघ एक है। मंदिरमार्गी हो, स्थानकवासी हो या तेरापंथी सभी एक होकर अपनी आराधना संपन्न करते हैं। हमारे विहार में कोरबा श्री संघ की जो भक्ति और वैयावच्च रही, वह अपने आप में अनूठी एवं अनुमोदनीय है। इस अवसर पर बिलासपुर, रायपुर, मुंगेली आदि स्थानों से बडी संख्या में श्रावक वर्ग उपस्थित था।

कोरबा में जिन मंदिर बनेगा

कोरबा नगर में परमात्मा का जिन मंदिर बनेगा। यह निर्णय पूज्य आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. की निश्रा में लिया गया। पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से श्रावक प्रवर श्री गौतमचंदजी सौ. उषादेवी मुकेशकुमारजी सौ. भारतीदेवी कोचर सुपुत्र भव्य सुपुत्री मायरा कोचर परिवार ने विशाल भूखण्ड कोरबा श्री संघ को जिन मंदिर निर्माणार्थ समर्पित किया।

श्री संघ द्वारा श्री गौतमचंदजी परिवार का हार्दिक अभिनंदन किया गया।

इस अवसर पर प्रवचन फरमाते हुए पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. ने कहा- जिन मंदिर से जुडने का सौभाग्य पुण्यशालियों को ही प्राप्त होता है। श्री संघ अब शीघ्र ही जिन मंदिर का भव्य निर्माण करे। सभी ने मंदिर निर्माण तक इष्ट वस्तु के त्याग का संकल्प ग्रहण किया। साथ ही मंदिर निर्माण के लिये कई श्रद्धालुजनों ने अपनी ओर से राशि अर्पण करने की घोषणा की।

वैशाली नगर भिलाई में प्रतिष्ठा 24 अप्रेल को

वैशालीनगर भिलाई में शिखर में शांतिनाथ परमात्मा एवं काले भैरव की प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में ता. 24 अप्रेल वैशाख वदि 13 सोमवार को होगी।

वैशालीनगर संघ की विनंती स्वीकार कर पूज्यश्री ने शुभमुहूर्त्त प्रदान किया। इस मंदिर का निर्माण व प्रतिष्ठा पूजनीया प्रवर्तिनी श्री निपुणाश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से संपन्न हुई थी। यहाँ मूलनायक आदि जिन बिम्बों की अंजनशलाका जहाज मंदिर की प्रतिष्ठा के अवसर पर पूज्यश्री के द्वारा ही संपन्न हुई थी।

अहिवारा में शिविर लगेगा

छत्तीसगढ़ के अहिवारा नगर में पंचदिवसीय ग्रीष्मकालीन शिविर का आयोजन 28.3.2017 से 1.4.2017 को संपन्न हुआ। खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वर जी म.सा. के शिष्य मुनि श्री समयप्रभसागर जी म.सा. मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा., मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागर जी म.सा. की पावन निश्रा में संपन्न हुआ। इस शिविर में बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। अंहिवारा के अलावा आसपास के देवगर, गिरहोला, बेरला, नंदनी, खुंदनी, चरीदा, बालोद आदि गाँवों के बच्चों ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज करायी।

मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा. ने बड़ी सरल भाषा में बच्चों को रात्रि भोजन, अभक्ष्य, जमीकंद आदि त्याग करने की प्रेरणा के साथ-साथ नवकार महामंत्र, सामायिक, मंदिर दर्शन आदि के महत्व को सरल भाषा में समझाकर संस्कारित करने का प्रयास किया गया।

शिविर में प्रतिदिन एक प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता था। प्रथम दिवस कायोत्सर्ग प्रतियोगिता रखी गयी क्रमशः नवकार लेखन प्रतियोगिता शुद्ध सामायिक में बच्चो ने उत्साह से भाग लिया।

मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागर जी म.सा. ने भी बच्चों को सामायिक आदि गतिविधियो में अपना संपूर्ण सहयोग दिया।

समापन समारोह के समय दर्शन कोचर, अभय वडेरा, एकता खजांची और विशु लोढ़ा ने अपने अनुभव सुनाएं। सी.ए श्री संतोष वडेर ने भी सभी बच्चो को संबोधित करते हुए उत्साहवर्धन किया और अंत में जैन श्री संघ अहिवारा के अध्यक्ष श्री भंवरलाल वडेर ने सभी का आभार अभिव्यक्त किया। सभी को पुरस्कार वितरित किये गये। पुरस्कार वितरण के लाभार्थी भँवरलाल जी वडेर परिवार बच्चों ने अपनी-अपनी शान्ति के अनुसार रात्रिभोजन, अभक्ष्य, जमीकंद, चॉकलेट आदि त्याग किये साथ ही साथ सामायिक, मंदिर दर्शन, नवकारवाली आदि के नियम भी गृहण किये।

श्री संघ द्वारा बच्चों के लिये मध्याहन भोजन व शाम के समय अल्पाहार की व्यवस्था की गई।

तमिलनाडु जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ के चुनाव

पूजनीया साध्वी श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से गठित तमिलनाडु जैन श्वे. खरतरगच्छ श्री संघ के चुनाव गत दिनों संपन्न हुए। जिसमें श्री ज्ञान जैन अध्यक्ष, श्री नेमीचंदजी कटारिया वरिष्ठ उपाध्यक्ष, श्री प्रसन्नजी गोलेच्छा, श्री उत्तमचंदजी रांका, श्री रणजीतजी गोलेच्छा उपाध्यक्ष, श्री पदमजी टाटिया महामंत्री, श्री सुरेशजी लूणिया सह मंत्री, श्री अशोकजी लोढा कोषाध्यक्ष व श्री गौतमजी बैद सह कोषाध्यक्ष चुने गये।

अतिप्राचीन महाचमत्कारी

श्री अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ

के

शास्त्र शुद्ध जीर्णोद्धार में लाभ लीजिये

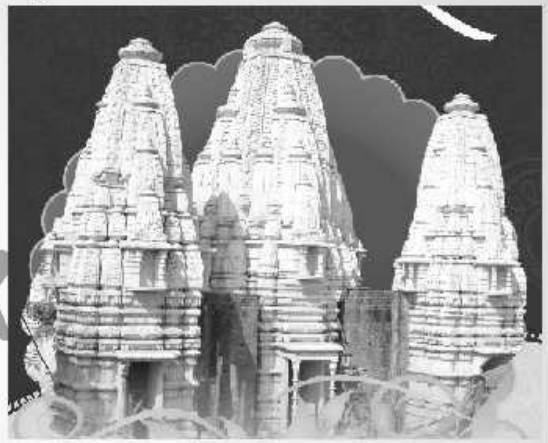

जीर्णोद्धार प्रेरणा व
निश्रा प्रदाता
पूज्य गुरूदेव गच्छाधिपति
आचार्य भगवंत
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी
म.सा.

पूज्यश्री की प्रेरणा से मूलनायक परमात्मा का उत्थापन किये बिना शास्त्रशुद्ध जीर्णोद्धार हो रहा है। नूतन मंदिर निर्माण से जीर्णोद्धार में आठ गुणा फल शास्त्रकार भगवंतों ने बताया है। यह जीर्णोद्धार तो आचार्य भगवंत श्री सिद्धसेनदिवाकर द्वारा कल्याण मंदिर स्तोत्र की रचना द्वारा शिवलिंग में से प्रकट हुए एक अतिप्राचीन महा प्रभावशाली तीर्थ का हो रहा है। जीर्णोद्धार कार्य तीव्र गति से चल रहा है। इसमें आपके सहयोग की अपेक्षा है।

1,11,111.00 की राशि अर्पण कर जीर्णोद्धार सहभागी के रूप में संगमरमर की पट्टिका में अपने परिवार के दो नाम अंकित करवाकर महान् पुण्य लाभ प्राप्त करें।

संपर्क सूत्र

श्री अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ जैन श्वे. मारवाडी मूर्तिपूजक समाज ट्रस्ट

श्री अवंति पार्श्वनाथ चौक, दानी गेट, पो. उज्जैन- 456 006 म.प्र.

फोन: 0734 2555553/2585854

अध्यक्ष- हीरालाल छाजेड- 94068 50603, सचिव- चन्द्रशेखर डागा- 94250 91340

जीर्णोद्धार समिति अध्यक्ष पुखराज चौपडा- 94251 95874

बैंक खाता– बैंक ऑफ बडौदा, उज्जैन–खाता नं. 05050100007820 / IFSC CODE- BARBOUJJAIN

भारतीय स्टेट बैंक, उज्जैन– 63041232720 IFSC- SBIN0030062

पूज्य श्री के जन्म दिवस निमित्त स्थान–स्थान पर विभिन्न कार्यक्रम का आयोजन

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के 57वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य पूरे भारत में स्थान स्थान पर कई आयोजन संपन्न हुए।

अहमदाबाद नगर में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् द्वारा साधर्मिक बन्धुओं व अजैन परिवारों में किट वितरण का कार्यक्रम किया गया। बैंगलोर, इचलकरंजी, नीमच आदि कई क्षेत्रों में विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से अहिवारा में पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. की निश्रा में सामायिक का आयोजन किया गया।

बैंगलोर में केयुप का आयोजन

खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. की आज्ञानुसार प.पू. साध्वी जी श्री प्रियवंदाश्रीजी म., श्री शुद्धांजना श्रीजी म. आदि ठाणा की पावनीय निश्रा में श्री जिन कुशल सूरि जैन दादावाड़ी ट्रस्ट के तत्वावधान में मानव सेवा के कार्य के अन्तर्गत अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् के द्वारा गर्मियों के मौसम में शीतल पेयजल की सुन्दर व्यवस्था बसवनगुड़ी दादावाड़ी के बाहर के.आर. रोड की तरफ सोमवार ता. 20.3.2017 से गणमान्य युवा परिषद् के केन्द्रीय समिति, ट्रस्ट मंडल एवं युवा परिषद् बैंगलोर शाखा के सदस्यों के कर कमलों से शुरु की गई। इस अवसर पर काफी सदस्यों ने उपस्थिति दर्ज कर सुकृत के कार्यों की अनुमोदना की, अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् बैंगलोर शाखा के अध्यक्ष ललित डाकलिया ने समस्त भारत की 70 से अधिक शाखाओं से इस भीषण गर्मी के मौसम में कम से कम एक शीतल जल की अस्थायी प्याऊ खोलने का आव्हान किया।

मंगल प्रवेश कानपुर नगर में

प.पू. आचार्य देवेश गुरुदेव श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वर जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी प.पू. गणिनी पद विभूषिता गुरुवर्या श्री सुलोचना श्रीजी म.सा. की सुशिष्या प.पू. प्रियस्मिता श्रीजी म.सा. आदि ठाणा 6 का ता. 16 मार्च को अध्यक्ष सुबोध भाई शाह के निवास स्थान से फूलबाग एल आई सी चौराहा पर प्रात: 8.30 बजे सकल श्री संघ द्वारा मंगल सामैया श्वे. मूर्तिपूजक श्री संघ बिरहाना रोड मुनिसुव्रत मंदिर जी में आप श्री का मंगल प्रवेश बहुत ही उत्साह पूर्ण हुआ।

सामूहिक चैत्यवंदन, पश्चात सामूहिक धर्म सभा में गुरुवर्या श्री द्वारा मंगलाचरण, महिला मंडल द्वारा प्रवेश गीतिका, मंगल प्रवचन, गीतिका, अध्यक्ष सुबोध भाई ने अपने उद्बोधन में कहा ये धर्म की गंगा दिल्ली से बहती हुई आई है, इसका लाभ हमारे कानपुर श्री संघ को अवश्य मिलना चाहिए, उस समय बैठे सभी व्यक्तियों ने खड़े होकर चातुर्मास की भावभरी विनंती की!

साधु साध्वी समाचार

पूज्य उपाध्याय **श्री मनोज्ञसागरजी म.** ब्रह्मसर से विहार कर अहमदाबाद होते हुए सूरत पधारे। सूरत में उनकी निश्रा में ता. 8 अप्रेल को दर्शन रेजीडेन्सी मगोब जिन मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा हेतु जाजम का मुहूर्त्त होगा। तत्पश्चात् पूज्यश्री नवसारी पधारेंगे, जहाँ उनकी निश्रा में दीक्षा होगी। दर्शन रेजीडेन्सी मगोब सूरत में श्री शीतलनाथ जिन मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा 7 मई 2017 को होगी।

पूज्य मुनिराज **श्री मुक्तिप्रभसागरजी म.** मनीषप्रभसागरजी म. ठाणा 2 पचपदरा से विहार कर सांचोर पधारे हैं। उनकी निश्रा में नवपदजी ओली की आराधना संपन्न होगी। ओली की आराधना करवाने का लाभ श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ सांचोर के अन्तर्गत श्री जीवराजजी उकचंदजी श्रीश्रीश्रीमाल परिवार ने लिया है।

पूज्य मुनि **श्री मयंकप्रभसागरजी म. मेहुलप्रभसागरजी म.** पालीताना हरि विहार में बिराज रहे हैं। वहाँ से 22 अप्रेल को विहार कर गिरनार पधारेंगे, जहॉ दादा गुरुदेव के प्राचीन चरणों की प्रतिष्ठा होगी।

पूज्य गणिवर **श्री मणिरत्नसागरजी म.** आदि ठाणा मालपुरा से विहार कर जयपुर पधार गये हैं।

पूजनीया प्रवर्तिनी **श्री शशिप्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा मालपुरा से विहार कर अजमेर, फलोदी पार्श्वनाथ तीर्थ होते हुए बीकानेर पधार रहे हैं।

पू. गणिनी प्रवरा **श्री सुलोचनाश्रीजी म.** आदि ठाणा श्री पार्श्वमणि तीर्थ पेद्दतुम्बलम् बिराज रहे हैं। वहीं उनकी निश्रा में नवपद ओली की आराधना होगी।

पू. गणिनी प्रवरा **श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा मालपुरा से विहार कर भीलवाडा, करेडा पार्श्वनाथ तीर्थ, उदयपुर, केशरियाजी होते हुए सूरत की ओर विहार कर रहे हैं।

पू. साध्वी **श्री मनोरंजनाश्रीजी म.** आदि ठाणा 8 विहार करते हुए करेली पधारे हैं। वहाँ से सिवनी बालाघाट की ओर विहार कर रहे हैं।

पू. माताजी म. **श्री रतनमालाश्रीजी म.** पू. **बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा कोरबा से विहार कर बिलासपुर पधारे। वहाँ से ता. 29 की शाम को विहार कर ता. 1 अप्रेल को शाम को भाटापारा नगर में प्रवेश किया। ता. 2 अप्रेल को उनका मंगल प्रवचन हुआ। शाम को रायपुर की ओर विहार किया है। ता. 7 अप्रेल को रायपुर देवेन्द्रनगर में प्रवेश होगा।

पू. साध्वी **श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा की पावन निश्रा में वापी एवं पू. साध्वी श्री मनोरमाश्रीजी म. आदि ठाणा की निश्रा में सेलवास में नवपदजी की ओली की आराधना करवाई जा रही है।

पू. साध्वी **श्री विमलप्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा चौहटन से विहार कर बाडमेर, सिणधरी होते हुए नाकोडाजी पधारे हैं। जहाँ नवपदजी ओली की आराधना करेंगे।

पू. साध्वी **श्री कल्पलताश्रीजी म.** आदि ठाणा जैसलमेर से विहार कर देवीकोट, भाडखा, बायतू होते हुए श्री नाकोडाजी पधारे हैं। ओलीजी

की आराधना नाकोडाजी करके पाली की ओर विहार करेंगे।

पू. साध्वी **श्री प्रियस्मिताश्रीजी म.** आदि ठाणा 6 कानपुर से विहार कर 1 अप्रेल को लखनउ पधारे हैं।

पू. साध्वी **श्री विरागज्योतिश्रीजी म. विश्वज्योतिश्रीजी म.** ठाणा 3 नाशिक कान्ति मणि विहार में बिराज रहे हैं। वहाँ से चैत्री पूर्णिमा नवपद ओली के पश्चात् विहार कर खानदेश पधारेंगे। खापर में उनकी पावन निश्रा में नमिनाथ जिन मंदिर का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मनाया जायेगा।

पू. साध्वी **श्री शुद्धांजनाश्रीजी म.** आदि ठाणा 6 बैंगलोर से विहार कर मंडिया पधारे हैं। वहाँ उनकी निश्रा में नवपद ओलीजी की आराधना संपन्न होगी।

पू. साध्वी **श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म.** आदि ठाणा सिंधनूर से विहार कर 28 मार्च को पूना पधारे हैं। वहाँ से सूरत होते हुए अहमदाबाद पधार रहे हैं। जहाँ उनकी निश्रा में 14 मई से 21 मई 2017 तक बालिकाओं का शिविर आयोजित किया जा रहा है।

पू. साध्वी **श्री स्नेहयशाश्रीजी म.** आदि ठाणा 4 का मंगल प्रवेश देवेन्द्रनगर रायपुर में ता. 29 मार्च को हुआ। देवेन्द्रनगर का शीतलनाथ परमात्मा का मंदिर आपकी प्रेरणा से बना है। जिसकी प्रतिष्ठा 17 अप्रेल को संपन्न होने जा रही है।

पू. साध्वी **श्री संघमित्राश्रीजी म.** आदि ठाणा नीमच पधारे हैं। वहाँ से विहार कर जावरा अष्टापद तीर्थ पधारेंगे, जहाँ उनकी निश्रा में ता. 12 मई से 21 मई तक बालिकाओं का शिविर आयोजित किया जा रहा है।

दो दिवसीय मालपुरा– होली मेला संपन्न

मालपुरा दादाबाडी तीर्थ में तृतीय दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरिजी के साक्षात प्रत्यक्ष दिवस के उपलक्ष्य में दो दिवसीय मेले का आयोजन हुआ। इस मेले को पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. के आज्ञानुयायी पूज्य गणिवर श्री मणिरत्नसागरजी म. एवं पू. प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. पू. गणिनी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा तथा पू. प्रवर्तिनी श्री विचक्षणश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री चन्द्रकलाश्रीजी म. पू. मणिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा की पावन सानिध्यता प्राप्त हुई।

मेले के प्रथम दिवस दिनांक 12 मार्च 2017 को अविका नगर से मालपुरा दादाबाड़ी तक प्रात: चतुर्विध संघ के साथ पदयात्रा आयोजित की गई। इस पदयात्रा में प.पू. गणिवर्य श्री मणिरत्न सागर जी म.सा. एवं साध्वी मण्डल के साथ-साथ हजारों की संख्या में भक्तजन शामिल थे तथा चंग-ठप. शेखावाटी फाग, व भक्तजन नाचते-गाते प्रभु व गुरु भक्ति करते हुये चल रहे थे। इस अवसर पर प.पू. गणिवर्य श्री मणिरत्न सागर जी म.सा. के साथ 40 जैन व जैनेत्तर यात्री भी जयपुर से पैदल चलते हुये शामिल हुये। पैदल संघ के दादाबाड़ी पहुंचने के बाद धर्मसभा आयोजित की गयी। जिसमें पैदल यात्री संघपति के बहुमान किये गये तत्पश्चात् दादा गुरुदेव की बड़ी पूजा का आयोजन रहा। सायंकालीन आरती के पश्चात् रात्री 9.00 बजे विशाल भक्ति संध्या का आयोजन हुआ। भजन संध्या के दौरान हजारों की भीड़ ने दादा गुरुदेव के जयकारे से भक्तिमय माहौल बना दिया। सर्वप्रथम श्री ज्ञान विचक्षण महिला मण्डल की सदस्याओं ने नवकार मंत्र पर आधारित प्रस्तुत दी। चैन्नई के बाल गायक कलाकार प्रतीक पींचा, श्रीमती उषा लहरी जयपुर, श्री विश्वास राय मुम्बई (प्रसिद्ध बालीवुड सिंगर) व श्री हेमन्त झाबक महासमुन्द्र (छ.ग.) आदि ने भजनों के माध्यम से दादा गुरुदेव की भक्ति का सरगम सुनाया। सम्पूर्ण रात्री में भजनों का दौर चलता रहा। सभी भक्तो द्वारा भजनो का आनन्द लिया गया। दूसरे दिन प्रात: 6.00 बजे भक्तामर पाठ व गुरु इकतीसा, 8.30 बजे पक्षाल व स्नात्र पूजा, 10.30 बजे गुरुदेव की बड़ी पूजा में कई भक्त जन शामिल थे। खरतरगच्छ संघ जयपुर द्वारा आयोजित सम्पूर्ण मेले का लाभ स्व. गुमानमल जी मालू की स्मृति में मालू परिवार ने लिया। संघ द्वारा लाभार्थी परिवार की अनुमोदना व अभिनन्दन किया गया।

–अनूप कुमार पारख, संघ मंत्री

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal registration No. RJ/SRO/9625/2015-2017 Date of Posting 7th

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

जटाशंकर अपनी आदत से लाचार था। कुसंगति के कारण शराब पीने की उसे आदत पड़ गई थी। उसकी पत्नी को यह रत्तीभर भी स्वीकार्य नहीं था। इस कारण लडाई चलती ही रहती थी। एक दिन जटाशंकर की पत्नी ने स्पष्ट रूप से कह दिया कि तुमने यदि शराब का त्याग नहीं किया तो मुझे घर का त्याग करना पडेगा।

जटाशंकर ने आखिर शराब छोड़ने का विचार कर लिया।

कुछ दिनों के विराम के बाद एक दिन वह नहीं रह पाया। मित्रों के आग्रह ने उसके संकल्प को ध्वस्त कर दिया। शराब पीने के बाद मुंह से बदबू दूर करने के लिये सुगन्धित पदार्थ का सेवन भी कर लिया ताकि पत्नी को पता न चले।

घर लौट रहा था कि वह स्कूटर से नीचे गिर पडा। चेहरे पर चोट आई। नाक, ललाट, ठुड्डी पर खरोंचे आई। वह घबरा गया।

चुपके से घर में पहुँचा। देखा तो पत्नी सो रही थी। उसने जल्दी से फर्स्ट एड़ बॉक्स खोला। सोफरामाइसिन की ट्यूब लेकर वह जल्दी से दर्पण के सामने गया। उसमें घाव देखकर दवाई लगा दी और सो गया।

सुबह पत्नी उठी। थोडी देर बार जटाशंकर को उठाते हुए बोली-तुमने फिर से शराब पी।

जटाशंकर बोला- तुम्हें पता कैसे चला कि मैं शराब पीकर आया हूँ।

उसने कहा- जाकर दर्पण देखो! दर्पण पर दवाई लगी है। तुमने चेहरा देखा होगा। दर्पण में चेहरे की चोट दिखाई दी, तब अपने चेहरे पर दवा न लगा कर दर्पण में दिख रहे चेहरे पर दवा लगा दी।

गलती को छिपाने की हर कोशिष बेकार साबित होती है। आज नहीं तो कल गलती प्रकट हो ही जाती है।

भीलवाड़ा दादावाडी ट्रस्ट में चयन

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् भीलवाड़ा के 3 सक्रिय सदस्यों का भीलवाड़ा दादावाडी ट्रस्ट मंडल में सर्व सहमति से चुने जाने पर हार्दिक बधाई। भीलवाड़ा श्री संघ ने युवा परिषद् के कार्यो की सराहना करते हुये भीलवाड़ा परिषद् के 3 सदस्यों को 5 के ट्रस्ट पैनल में चुना। सकल भीलवाड़ा श्री संघ का अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् शाखा भीलवाड़ा हृदय से आभार व्यक्त करता है तथा हमारे युवा साथियों को बहुत बहुत बधाई अरविन्दजी महात्मा (युवा परिषद् अध्यक्ष), अनिलजी छाजेड़ (संरक्षक), अरूणजी कोठारी (वैयावच्च समिति) अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् भीलवाड़ा।

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिरणी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन
www.jahajmandir.org

शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408